OM 14 FINAL-c_Page 1 and 2 02-10-2014 18:20 Page 3

भूल हो जाने पर....

बिना हेलमेट पहने हुए मोटरबाईक चलाने वाले एक युवक को पुलिस रोकती है। उसके पिता एक बड़े एन.जी.ओ. के अध्यक्ष हैं। सरकार तक भी उनकी बहुत पहुँच है। उस युवक ने कहा ''आप मुझे रोक रहे हैं! मुझे बहुत ही महत्वपूर्ण सरकारी मीटिंग में शामिल होना है। ज्यादा कुछ बोलेंगे तो......'' पुलिस ने कहा ''आप क्या कर लेंगे? मैं आपकी बात क्यों मान लूँ?''

''आपको सामान्य और वी.आई.पी. के बीच का भेद समझना चाहिए! कभी भी ससेन्ड होने की नौबत आ जायेगी'' युवक बेफिकर होकर कहता है...।

- ब्र. कु. गंगाधर

''तो..तो अब मुझे आपको कायदे का भान कराना ही होगा! मैं आप पर दंडात्मक कार्यवाही करुँगा'' पुलिस ने कड़क होकर कहा....। तब वो युवक ढ़ीला पड़ गया।

मनुष्य को स्वयं की भूल समझ आ जाने पर विनय-विवेक से नहीं चूकना चाहिए, यही है संस्कारिकता। मनुष्य का असली रूप झगड़े के समय ही प्रकट होता है। शिक्षित और ऊँची पहुँच रखने वाले मनुष्य सहजता से भूल स्वीकारने में गलत दलीलबाज़ी में उतर जाते हैं।

मई-जून की गर्मी के बारह बजे की धूप में आपने फर्ज़ अदा करते पुलिस को कभी शाबाशी दी है? सिर्फ ट्रैफिक पुलिस के बारे में ही नहीं, घर, परिवार, सामाजिक जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी हम भूल को स्वीकार न करना जन्मसिद्ध अधिकार मानते हैं।

मानव की भूल ने ही इस संसार को बिगाड़ा है, उनकी सुख-शान्ति छीन रखी है। 'हरिजन सेवक' के एक अंक में गांधी जी ने लिखा था कि भूल करना, यह मानव स्वभाव सहज है, लेकिन भूल को स्वीकार कर उसी तरह आचरण करना जिससे कि वो भूल दोबारा फिर से न हो उसका नाम मर्दानगी है।

'गीता प्रवचन' में विनोबा ने कितनी सुंदर बात कही है – ''भूल हो जाने का ख्याल होने के बाद क्या आप ऐसा ही आचरण फिर से करते रहेंगे? गांधी जी के मतानुसार भूल को स्वीकार करना, ये कचरे को झाड़ू लगाकर हटाने के समान है। भूल का भान हो जाने को अपना नया बचपन या प्रभात मानें।

कैसे भूल को सुधार सकते हैं, उसका प्रेरक दृष्टांत विदेशी लेखक डेल कार्नेगी का है। कार्नेगी भूल के संबंध में बताते हैं कि ''मेरे घर से एक मिनट के अंतराल पर पैदल चलकर जंगली लकड़ियाँ मिले ऐसा नैसर्गिक वन है। मैं कई बार वनभूमि में अपने श्वान (कुत्ते) को लेकर निकल पड़ता हूँ। रेक्स मेरा छोटा सा बॉस्टन बुल डॉग है, बहुत ही प्यारा, स्नेही, मैत्रीपूर्ण और निर्दोष। मैं उसके गले में पट्टे की चेन बांधे बिना ही अपने साथ ले जाता हूँ।

'एक दिन हमें पार्क में एक घोड़ेसवार पुलिस मिल गए, जिसे अपना अधिकार जमाने की खुमारी हो गई थी। उसने मुझे चेतावनी देते हुए कहा: ''आपने अपने कुत्ते को ऐसे बिना पट्टे के चेन से फ्री छोड़ दिया है, इसका क्या अर्थ है? क्या समझते हो तुम?

'' हाँ, यह गुनाह है, ये मुझे पता है, परंतु मेरा कुत्ता किसी को नुकसान नहीं पहुँचायेगा ऐसा मेरा मानना है'' मैंने कहा।

''आप क्या खाक मानते हो! आपने क्या विचार नहीं किया है! और कानून को आप क्या मानते हो या उसके बारे में ज़रा भी विचार नहीं करते। अभी मैं तुम्हें जाने देता हूँ लेकिन दूसरी बार इस कुत्ते को पट्टे की चेन बिना ऐसे खुला घुमते हुए देखा तो सीधे तुम्हें मजिस्ट्रेट के सामने ला खड़ा कर दूँगा।

मैंने कहा कि मैं हर नियम का नम्रतापूर्वक पालन करुँगा। ''मैंने अपने कुत्ते को पट्टा पहनाया भी, लेकिन मेरे कुत्ते को पट्टा पसंद नहीं था इसलिए मैंने विचार किया कि देखा जाएगा! हम एक दिन मस्ती कर रहे थे, वहाँ ही कानून के महारथी को घोड़े पर सवार होकर आते देखा और मेरा कुत्ता बिना पट्टा पहने आगे चल रहा था!''

''मुझे लगा कि आज तो जान से मारे गये!'' इसीलिए पुलिस को अवसर दिये बिना ही मैंने कहा: ''ऑफिसर, आज तो आपने मुझे रंगे हाथों पकड़ ही लिया। मेरा गुनाह मुझे कबूल है, मेरे पास उसके लिए कोई दलील या बहाना नहीं है। आपने मुझे अच्छी तरह कहा था कि कुत्ते को चेन बिना साथ में लायेंगे तो आपको छोड़ूँगा नहीं।''

''हाँ, आपकी बात सच्ची है...लेकिन मुझे लगता है कि आपको हाथ में चेन लेकर घूमना अच्छा नहीं लगता है! यहाँ --शेष पेज 9 पर..

कुछ भी हो जाए हिम्मत नहीं हारो

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

त्याग एक भाग्य है, पर वास्तव में जिसको त्याग वृत्ति वाला बनना है तो बाबा से जो प्राप्तियाँ हुई हैं उन्हें इमर्ज करो तो कहीं आँख नहीं डूबेगी। जो कभी भी न डिस्टर्ब होता है, न डिस्टर्ब करता है ऐसा कोई है तो मुझे बतावे।

साकार मुरलियों में बाबा ने जो कहा है सो हो रहा है। साकार मुरली को गहराई से पढ़ना चाहिए, इसे अच्छी तरह से समझो। जिसने साकार मुरली को समझा उससे पता चलता है कि निश्चय क्या होता है, परमात्मा क्या होता है, हम आत्मा क्या हैं? साकार को देखते हैं तो तीनों ही इकट्ठे हैं, मैंने तो साकार को देखा था ना, तब भी ऐसा था अब भी ऐसा है। साकारी भासना भी है और साकार, अव्यक्त कैसे बना वो भी भासना है, निराकार को कैसे साथी बनायें, यह भी अनुभव है। अब सब बाबा की रचना को देख आप सबके लिए बहुत प्यार पैदा होता है, जैसे मैंने बाबा से प्यार लिया है, ऐसे तुम भी लो और सबके साथ मिलनसार होके रहो, यह है निरंतर योग। प्यार इसलिए है क्योंकि बाबा के बच्चे हैं, हम गोप-गोपियाँ हैं इसलिए मुरली से प्रेम है, प्रीत बुद्धि विजयंती। कभी भी कोई संकल्प निराशा का नहीं आयेगा। कुछ भी हो जाए हिम्मत नहीं छोड़ेंगे। कोई मुझे कितना भी बुरा समझे मैं जैसा हूँ, वैसा बाबा का हूँ। भले कानों में कितनी भी बातें आई हों, कान मेरे इसलिए नहीं हैं। जो कुछ मेरे से भूल होती है मैं बाबा को सुनाती हूँ, तो बाबा मुझे माफ करता है। परन्तु और कोई बहन भाई है सूक्ष्म भले कुछ भी करे, माफ करना आना चाहिए। मैंने कोई भूल की तो मैं भगवान से माफी मांगती हूँ। अपने से भी कहती हूँ मेरे से भूल हुई है तो लगता है, न मैं अपने को माफ कर सकती हूँ, न बाबा मुझे माफ करता है। समझो, मेरे से किसी को तकलीफ हुई बाबा माफ नहीं करेगा। जिसका जिसके साथ कुछ ऐसा व्यवहार होता है, तो वो उससे ही माफी मांग लेवे, तो वह थोड़ा हल्का हो सकता है। लेकिन अभिमान के कारण कहेंगे इसने किया तब मैंने कहा, ऐसे थोड़ेही उसको कहा...ऐसे अभिमान वाले फिर निरंतर याद में नहीं रह सकेंगे। आत्मा को देह-अभिमान के वश गफलत करने की आदत हो गई है, भले बहुत देह-अभिमान गया है पर थोड़ा-सा इतना भी अंदर रहा है जिसकी कभी फीलिंग आ जाती है तो बाबा याद नहीं रहता है।

आत्मा में मन-बुद्धि-संस्कार हैं, मन को मैंने पुरुषार्थ में लगा दिया, बुद्धि में ज्ञान की धारणा किया तो योग लगा। तो याद में रहने का नैचुरल संस्कार बन गया जो मन न चलायमान होता है, न डोलायमान होता है, अगर चलायमान हुआ तो बुद्धि में ज्ञान कम है। बुद्धि में आत्मा का, परमात्मा का, ड्रामा का अच्छा ज्ञान है तो आत्मा, परमात्मा, ड्रामा में एक्यूरेट है। जब से मैं बाबा के पास आई हूँ, योग पर बहुत अटेन्शन रखा है। कभी भी कोई काम के लिए बाबा ने मुझे बुलाया नहीं होगा, अपने आप हाज़िर हो गई होंगी। सामने आते ही जनक यह करना है, जी बाबा मतलब बहुत फायदा लिया है जो काम भाई नहीं कर सकते थे वो भी बाबा ने करवाया। अभी इस उम्र में भी मेरी मेमोरी ठीक हो तो यह बाबा की कमाल है ना! जो भुलाने वाली बात है वह याद नहीं करती, जो याद करने वाली बात है वो भूलेगी नहीं। ऐसी बातें न बिसरो और जो न याद करने की बातें हैं वो याद नहीं करो, यह है निरंतर याद। अपने को साधारण नहीं समझो, एक दो को अच्छी तरह से देखो क्योंकि हम सब अच्छी आत्मायें हैं, भगवान के बच्चे हैं। भले हमारे मंदिर बनेंगे, पर मंदिर में रहने के लिए नहीं मिलेगा, यहाँ मनुष्य से देवता बनने के लिए बैठे हो। पहले केवल 4-5 भाई थे, अभी देखो इतने सारे भी आके बैठ गये हो। जो भी है हर एक का पार्ट अपना है, परन्तु एक दो के लिए फेथ और रिगार्ड हो। जो भी बात हुई है या होती है, सेकेण्ड में बाबा भी कहता है उसे फुलस्टॉप लगा दो लेकिन मैं कहती हूँ यह भी वीकनेस है। ड्रामा अनुसार सीन चेंज हो रही है तो फुलस्टॉप क्यों दूँ! यह गहरी बात है। ड्रामा की नॉलेज में बहुत गहराई में जाने से नॉलेज देने वाला याद रहेगा। जितना भी ड्रामा की नॉलेज है उसे यूज़ करें, यह भी ड्रामा में नूँधा हुआ था। कोई प्लान नहीं था पर ड्रामा अनुसार...उसको स्वीकार करो क्योंकि यह टाइम जा रहा है इसलिए शोभता नहीं है। ड्रामा में समय का ज्ञान है तो इसमें समय को सफल करना है।

पावरफुल बन फीलिंग को फिल करो

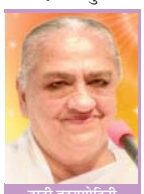

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

प्रश्न: दादी, बाबा कभी-कभी कहता है कि आत्मायें बहुत दु:खी हो रही हैं, बहुत दु:ख बढ़ रहा है इनको मुक्ति-जीवनमुक्ति देना है, तो हम किस स्थिति में रहें जो वे दु:ख से मुक्त हों, जब तक गेट खुले, क्योंकि गेट जब खुलेगा तब तो सब अपने आप मुक्त हो जायेंगे! अभी हमारी कौन-सी ऐसी स्थिति हो जो उनको दु:ख की फीलिंग कम हो जाए?

उत्तर: इसके लिए हमें अपनी सम्पूर्ण स्टेज में ठहरना होगा। अब युद्ध में समय न जाये। जैसे अभी अच्छे बैठे हैं लेकिन बीच में संकल्प आ जाये यह करना है या यह हो गया, दोनों में से कोई संकल्प न आये। बस, सबको देना है, पहले खुद पावरफुल होंगे तभी तो देंगे। जैसे बाबा बैठता था तो फीलिंग आती थी ना, दे रहे हैं। जैसे जब कोई योगयुक्त होकर बैठता है तो लगता है कि बहुत पावरफुल योग कर रहा है। हर एक को पुरुषार्थ तो करना है ना। और कोई फिर ऐसे भी हैं, जिनका योग नहीं लगता, वह तो होंगे ही, लास्ट तक होंगे इसलिए उसका ज़्यादा सोचे नहीं। यह क्यों करता है, यह कब बदलेगा... अरे, पहले मैं तो बदलूँ। पहले मैं बदल जाऊँ तो दुनिया अपने आप बदलेगी।

प्रश्न: दादी, बाबा ने एक मुरली में कहा है कि आप बच्चे अगर एक मिनट पावरफुल अशरीरी बन जाओगे तो उसका असर अपने आप सारा दिन नैचुरल योग की तरफ खींचता रहेगा, वह स्टेज कैसे बने?

उत्तर: इसमें मेहनत तो है, अटेन्शन देना पड़ता है, बाकी हो जायेगा। बस, सभी पावरफुल योग में बैठें। अपने युद्ध में ही न लगे रहें। पावरफुल योग होगा तो उसका प्रभाव चारो ओर ज़रूर फैलेगा। जैसे बैठने समय योग पावरफुल हो जाता है ऐसे चलते-फिरते, काम करते भी अटेन्शन हो तो नैचुरल हो जायेगा।

प्रश्न: हम तो अपने ऊपर अटेन्शन देते हैं, बाकी हमारे चारो तरफ जो कुछ कारोबार चल रहा है यज्ञ में, क्या उसको हम सहज स्वीकार कर लें? अगर हमारे संकल्प उसके प्रति चलेंगे तो वो तो ठीक नहीं है, तो क्या उसे ठीक मानकर स्वीकार कर लें?

उत्तर: स्वीकार क्यों करें! यज्ञ के हित में हो तो स्वीकार करेंगे ना। दूसरा-यज्ञ रक्षक बाबा बैठा है, बाबा को, बड़ों को हम सुना देवें कि यह थोड़ा हो रहा है...बस, हमारी ज़िम्मेवारी इतनी ही है क्योंकि हमारे संकल्प चलाने से कुछ होगा नहीं। और ही कहेंगे यह हमारे लिए पता नहीं क्या क्या सोचते हैं, इसलिए हम योगयुक्त होकर रहें तो वायुमण्डल में ज़रूर आयेगा और वो ऑटोमेटिक फैलता जायेगा। सिर्फ अटेन्शन चाहिए, बस।

प्रश्न: दादी, समय के अनुसार अभी आगे यज्ञ के भविष्य के बारे में आपको कुछ प्रेरणायें आती हैं? क्योंकि कई बार सोचते हैं कि अभी इतनी वृद्धि हो रही है और बाबा कहता है अन्त में भक्तों की भीड़ लगेगी, व्यवस्था कठिन हो जायेगा?

उत्तर: हाँ, वह समय आयेगा तो सही लेकिन अचानक ही आयेगा, वायुमण्डल में कुछ न कुछ ऐसा होगा, जो अभी हँस रहे हैं, खा रहे हैं, मौज मस्ती कर रहे हैं, खराब काम भी कर रहे हैं वो सब ऑटोमेटिकली बन्द हो जायेगा। लेकिन उस परिवर्तन में टाइम तो लगेगा। अभी हमारा संगठन पहले पक्का हो, मेरे ऊपर किसी की कमज़ोरी का असर न हो, ऐसी अवस्था तो होनी चाहिए। कोई समय कैसा होता है, कोई दिन कैसा...सारा ग्रुप थोड़ही वैसा बना है, कोई चढ़ता है, कोई ढ़ीला होता है...दोनों ही होता है। हम अपने को देखें, बस और नैचुरल जो हमारे साथ रहते हैं, उनके ऊपर भी असर होगा। लेकिन देखो सारा टाइम पावरफुल अवस्था है? इससे दूसरों में भी पावर आ सकती है।

प्रश्न: कोई कोई पूछते हैं, हम तो कह देते दादी हमारी संगम के अंत तक रहेंगी। बाबा कहता है मैं बैठा हूँ लेकिन फिर भी लोगों को संकल्प तो आता है ना! अगर सभी दादियां ऐसे ही चली जायेंगी तो प्रत्यक्षता किसकी होगी? आप दादियों को प्रत्यक्षता तो देखनी ही चाहिए!

उत्तर: यह तो बाबा के हाथ में है। बाबा किसी न किसी में वो ताकत भरता है। बाबा को यज्ञ चलाना है, वो तो चलायेगा ही। किसी न किसी से तो करायेगा। जैसे अभी जानकी दादी तो सम्भाल रही है ना! ऐसे और कोई भी निमित्त बन सकते हैं। आप हम क्यों संकल्प चलायें, बाबा साथ है ना!